सवाई माधोपुर (पूर्ववर्ती) जिले में बाढ़ नियंत्रण के साधन

*डॉ. गोपाल लाल गुप्ता

शोध सारांश

पूर्ववर्ती सवाई माधोपुर जिला 26°45’ उत्तर से 27°15’ उत्तरी अंक्षाश एवं 76°0’ से 77°24’ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित था। क्षेत्र में 1804, 1812, 1968, 1969, 1971, 1972, 1981 में बाढ़ से प्रभावित रहा है। बाढ़ का प्रमुख कारण प्राकृतिक कारक जिसमें वर्षा प्रमुख कारक है एवं द्वितीय कारक में मानवीय कारक है। प्रस्तुत अध्ययन में सवाई माधोपुर (पूर्ववर्ती) जिले में बाढ़ नियंत्रण के साधनों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

सवाई माधोपुर जिले में बाढ़ का प्रकोप बहुत लम्बे समय से है। प्राचीन समय से लेकर अब तक बाढ़ नियंत्रण के लिये काफी प्रयास किये गये जिनमें मुख्य कार्य बड़ी नदियों पर बाँध बनाना था। बाढ़ नियंत्रण के सन्दर्भ में कहा गया है कि “River uncontrolled are greatest engines of destruction but controlled, they are the greatest benefactors of Mankind”.

सवाई माधोपुर जिले बाढ़ नियंत्रण के लिये निम्न साधन अपनाये गये।

1. जंगलों या वनों का संरक्षण।
2. पहाड़ी ढ़लानों को चोपट करना।
3. नदियों के जलागम व प्रभाव क्षेत्रों के सन्दर्भ में बाँध बनाना।
4. नदियों और बाँधों से नहरे निकालकर पानी को विभाजित कर कृषि क्षेत्र में उपयोग में लेकर।
5. मिट्टी संरक्षण।

बाँध तथा नहरें (Dams and Canals)

उपर्युक्त बाढ़ नियंत्रण साधनों का उपयोग जिले की बाढ़ समस्या को दूर करने के लिये किया गया। इस अध्याय में उन सभी बाँधों का वर्णन किया गया है जो कि जिले की वर्तमान सीमा के अन्तर्गत मौजुद हैं और बाढ़ नियंत्रण करते हैं। साथ ही उन मुख्य बाँधों का भी उल्लेख है जो जिले की बाहरी सीमा पर है तथा जिनसे जिले की बाढ़ नियंत्रण पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

मोरेल बाँध :—

मोरेल बाँध सवाई माधोपुर जिले की बाढ़ तथा बाढ़ नियंत्रण का मुख्य नियंत्रण है। मोरेल बाँध 1952 में मोरेल नदी पर बनाया गया। मोरेल बाँध 76°.20 पूर्वी देशान्तर तथा 26°.20 उत्तरी अक्षांश पर जयपुर तथा सवाई माधोपुर रोड़

पर बागड़ी गाँव के निकट स्थित हैं। इस बाँध का कुल (केचमेंट) घेराव क्षेत्र 1250 वर्ग मील है। बाँध की भराव क्षमता 2707 एम.सी.फीट है। यह बाँध ढूंढ नदी, मोरेल नदी, खारली नदी को रोक कर के बनाया गया है ताकि पानी का बहाव निचले क्षेत्रों में अधिक नहीं हो।

मोरेल बाँध में अधिक पानी पर जाने पर अनेक छोटे–छोटे बाँधों के लिये इसमें से पानी निकाल दिया जाता है। सन् 1981 की बाढ़ में जयपुर जिले से नदियों में अधिक पानी आने के कारण बाँध तीन जगह से क्षतिग्रस्त हो गया था इसलिये राजस्थान सरकार वर्तमान समय में इस बाँध की क्षमता बढ़ा रही है तथा इसके किनारों को मजबूत करने के लिये पिंचिग करवा रही है।

ढील नदी बाँध (Dheel River Reservoir)

यह बाँध 1952 में बना था। बाँध ढील नदी के निचले भाग में बौंली तहसील में बनाया गया है। यह बाँध सिंचाई तथा बौंली तहसील में आने वाली बाढ़ को रोकने के लिये प्रमुख नियंत्रण है। यह बाँध ढील नदी के पानी को रोककर बनाया है। बाँध 16 फीट ऊँचा है। ढील बाँध से एक नहर पूर्व की ओर निकाली गई है। यह नहर 47 किलोमीटर दूर मलारना स्टेशन तक जाती है। यह बाँध 1951 में जयपुर जिले में भारी वर्षा के कारण टूट गया था जिस कारण बौंली तहसील के गाँव प्रभावित हुये।

रामसागर तालाब :–

रामसागर तालाब मोरेल नदी के निचले हिस्से में मलारना चोर गाँव के पास बनाया गया है। बाँध कई छोटे–छोटे नालों का पानी रोकता है जिससे मोरेल नदी का जलस्तर नहीं बढ़ता है। बाँध 6 किलोमीटर क्षेत्र में है।

सूरवाल बाँध

यह बाँध सवाई माधोपुर तहसील के सूरवाल कस्बे के निकट बनाया गया है। बाँध में क्षेत्र से निकलने वाली कई नदियाँ मिलती हैं तथा गम्भीर नदी जो बनास नदी की सहायक है को रोककर बनाया गया है। बाँध की भराव क्षमता 14 फीट है। वर्षाकालीन समय में यह बाँध पूरी तरह से भर जाता है। बाँध सन् 1954 में बनना शुरू हुआ तथा चार वर्षों में बनकर तैयार हुआ। सूरवाल बाँध से 11.5 मील लम्बी नहर निकाली गयी है। बाँध 11.0 हजार एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है।

भगवत गढ़ बाँध –

यह बाँध भगवतगढ में दुब्बी बनास के आस पास के पानी को रोककर बनाया गया है। बाँध की ऊँचाई 14 फीट है। यह बाँध भगवतगढ़ वनों से निकलने वाले पानी को रोकता है तथा क्षेत्र को बाढ़ से बचाना है। बाँध का जलगहन क्षेत्र 6.0 हजार एकड़ है।

देवपुरा बाँध –

यह बाँध सवाई माधोपुर तहसील में बनजारी गाँव के निकट तीन नालों को रोककर 24 फीट ऊँचा बनाया गया हैं। इस बाँध में 271 मिलियन क्यूरिक फीट जल रखने की क्षमता है।

कालीसील बाँध

यह बाँध सपोटरा तहसील में बरवासन देवी के निकट बनया गया है। इसे उत्तर में सथोटरा कस्बा है। बाँध 1951–57 में मोरेल नदी की सहायक कालीसिल नदी पर बनाया गया है। 1961 की बाढ़ के समय यह बाँध टुट

गया था। कालीसिल बाँध एक तरफ पहाड़ी है जिस कारण बाँध मजबुत है। बाँध के 12.5 मील नहर निकाली गयी है। बाँध की ऊँचाई 25 फीट तथा भराव क्षमता 1315 मीलियन क्यूरिक फीट है।

मानसरोवर बाँध –

यह बाँध बनास के जल स्तर को रोकने के लिये सवाई माधोपुर तहसील में बनाया गया है। यह बाँध 1960–63 में बनाया गया है। इसका जल स्तर 27 फीट है। इसके निर्माण में 21.0 लाख रूपये की लागत आयी है। कुल कमाण्ड क्षेत्र 6.0 हजार एकड़ है। इस बाँध का केचमेन्ट क्षेत्र 35 वर्ग मील है।

पँचोलास बाँध –

पँचोलास बाँध बनास नदी क्षेत्र में सवाई माधोपुर तहसील में बनाया गया है। यह बाँध 26 वर्ग मील क्षेत्र को घेरता है। इस बाँध से वर्षा ऋतु के बाद सिंचाई की जाती है। इससे औसतन 1500 एकड़ भू–क्षेत्र में सिंचाई की जाती है।

गलायी सागर

यह बाँध खण्डार तहसील में बनास नदी के के बायें किनारे पर बनाया गया है। इसका केचमेन्ट क्षेत्र 26.6 वर्ग मील है। यह बाँध गलेन्डीं नदी के जल को रोककर बनाया गया है। यह बाँध चारों और से 300 मीटर ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस बाँध के बन जाने से गलेण्डी नदी का बहाव धीमा हो गया है।

गंन्डाल सागर

यह बाँध बामनवास तहसील में गण्डाल गाँव में बनाया गया था। बाँध 15 वर्ग मील क्षेत्र का पानी समेटता है।

मोती सागर –

यह तालाब बामनवास तहसील में बामनवास के निकट बनाया गया है। इस बाँध से करेली नदी का बहाव कम हो जाता है। बाँध में 59.0 वर्ग मील क्षेत्र का पानी आकर भरता है। बाँध की ऊँचाई 8 फीट है।

मोरा सागर–

मोरा सागर बाँध गढ़मोरा कस्बे के पश्चिम में बामनवास तहसील में बनाया गया है। बाँध की ऊँचाई 20 फीट है। यह बाँध पूर्व में 300 मीटर ऊँची पहाड़ियों के बीच बना हुआ है। इसमें बामनवास तहसील के पश्चिम में बहने वाले नालों का पानी आता है। बाँध से 24 किलोमीटर लम्बी नही निकाली गयी है।

चाँदापुरा तालाब–

यह बाँध छोटी उंदेई के पश्चिम में गंगापुर तहसील में बनाया गया है। यह बाँध 12 फीट ऊँचा है। यह करेली नदी पर बनाया गया है। प्रस्तुत बाँध 35 वर्ग मील क्षेत्र में फैला हुआ है।

तालाब बरनाला –

यह तालाब वामनवास तहसील के बरनाला ग्राम में बनाया गया है जो कि 6 फीट ऊँचा है। इसमें गाँव के पास बहने वाले नालों को रोक कर पानी पहुँचाया जाता है क्योंकि नालों का पानी इसके बनने से पहले इक्ट्ठा होकर बहता था जो कि भूमि का कटाव करता हुआ आर्थिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करता था।

गम्भीर प्रवाह क्षेत्र–

गम्भीर नदी में करोली, सपोटरा, नादौती, हिन्डौन तथा टोडाभीम जल प्रवाह मिलता है। यहाँ क्षेत्र में भूमि मैदानी और एल्युवियल प्रकार की है, ढाल उत्तर तथा पूर्व की ओर है। अतः बहाव तथा कटाव अधिक होता है। इसलिए सरकार ने सवाई माधोपुर तथा भरतपुर जिले में कई बाँध तथा नहरें निकाली गयी है। फलस्वरूप नदी का बहाव कम हो जाता है जिसके बाढ़ नियन्त्रण को प्रोत्साहन मिला है।

जग्गर बाँध

जग्गर बाँध हिन्डौन तहसील में हिन्डौन सिटी के पूर्व में स्थित नयी बस्ती जग्गर में जग्गर नदी को रोककर बनाया गया है। इस बाँध में 88 वर्ग मील क्षेत्र का पानी आता है। यह बाँध 27 फीट ऊँचा है। बाँध में 1200 मीलियन क्यूबिक फीट पानी की क्षमता है। बाँध के पूर्व में एक नहर निकाली गयी है। बाँध 1981 की बाढ़ के समय टूट गया था। इस बाँध से 11.40 मील लम्बी नहरें निकाली गयी है।

बोने तालाब –

यह तालाब गम्भीर नदी पर बनाया गया है। टोडाभीम तहसील में स्थित यह बाँध 15 फीट ऊँचा है। बाँध 7.5 वर्ग मील क्षेत्र के जल को एकत्रित करता है।

पाँचना बाँध–

पाँचना बाँध टोडाभीम तहसील में बनाया जा रहा है। पाँचना बाँध पँचायी नदी पर बसेरी, भद्रावती, मान्ची, नमायी तथा आटा नालों के पीन को रोककर बनाया जा रहा है।

सवाई माधोपुर में गम्भीर नदी पर पाँचना बाँध बनाने में 1976–77 में 7 लाख खर्च किये गये। 1977–76 में 30.0 लाख व 1976–79 में 60.0 लाख रूपये खर्च किये गये। 1979–80 में 21.0 करोड़ रूपये खर्च किए गये। यह बाँध बालू मिट्टी से बनाया जा रहा है। बाँध की ऊँचाई 13.5 मीटर से बढ़ाकर 25.5 मीटर बढ़ा दी गयी है। भद्रावती का पानी भी इसमें आता है।

पीपलदा लिफ्ट योजना–

लग्हार तहसील में 34 गाँवों को हरा भरा करने के लिए चम्बल नही पर यह योजना चलायी जा रही है।

कानोता योजना–

यह योजना जयपुर से 13 किलोमीटर दूर ढूँढ नदी पर कानोता प्रोजेक्ट के नाम से शुरू की गयी है। यह ढूँढ नदी को रोककर बाँध बनाने की योजना है। इस बाँध का केचमेन्ट क्षेत्र 155.3 वर्ग मील है। जबकि भराव क्षमता 499 एम.सी.एफ है व ऊँचाई 45 फीट और कमारह क्षेत्र 5600 एकड़ होगा। इस बाँध में मोरेल नदी का धरातल पानी उपयोग आयेगा जिससे मोरेल की बाढ़ से बचाव होगा। क्योंकि 1951 की बाढ़ से ढूढ नदी व मोरेल नदी से 30 हजार एकड़ भूमि प्रभावित हुई थी।

प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट है कि सवाई माधोपुर जिले के बाँध तथा नहर तंत्र द्वारा बाढ़ रोकने की व्यवस्था, की गयी है। बाढ़ के प्रकोप को देखते हुए यह व्यवस्था अपर्याप्त है। बाँध और नहरें बहुत पुराने है। जो जीर्ण अवस्था में है। इन्हें सुधारना, बाँधों की ऊँचाई बढ़ाना, नहरों और बाँधों से मिट्टी निकालना आदि कार्य बहुत आवश्यक है।

वनों का संरक्षण–

वनों का महत्व मानव जीवन के लिये जितना महत्वपूर्ण है कि अग्नि पुराण में कहा गया है।

एक वृक्ष दस पुत्रों के बराबर होता है और पुत्र भी जिससे भूमि को आर्द्रता, शीतल वायु और छाया मिलती है। भूमि का अपरदन रूकता है, खाद के लिये पत्तियाँ मिलती है और खाने के लिये अनेक प्रकार के कन्द, मूल और फल मिलते हो।

सवाई –माधोपुर जिले में ही नहीं अपितु बाढ़ प्रभावित सभी क्षेत्रों में वनों से बाढ़ समस्या की पूर्ण रूप से प्रभावित किया है। वनों के द्वारा पानी के तीव्र प्रवाह कम होती है। तथा इस प्राकृतिक विपदा को कम किया है। जिले में भी बाढ़ समस्या को दूर करने के लिए पेड़, पौधें जंगलों में लगाने का कार्य शुरू से ही किया जा रहा है। क्षेत्र में 69 प्रतिशत अवरोधिक तथा 27.6 प्रतिशत रक्षित वनों के अन्तर्गत रखा गया है। जिले में वन सरंक्षण के साथ वन लगाना, चरागाह भूमि की देखभाल करना, घास को इक्ट्ठा करना, तथा जंगली खेती की देखभाल करने का कार्य किया जा रहा है। मुख्य रूप से बनास नदी के बिहड़ क्षेत्र में पेड़ लगाने का कार्य किया जा रहा है। धौंक के वनों में 40 वर्षीय चक्रीयकरण का उपयोग किया जा रहा है। जिले में प्रति वर्ष इस कार्य के अन्तर्गत पेड़ पौधों की वृद्धि हो रही है।

***सह आचार्य**
भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय मालपुरा (राज.)

संदर्भ सूची

1. डॉ. गोपाल लाल गुप्ता – लघु शोध प्रबन्ध, सवाई माधोपुर जिले की बाढ़ समस्या
2. Gazetter – Distt. Sawai Madhopur, 1981
3. Sharma H.S. – Ravine Erosion in India, 1980